# किंग का स्वाकृतिक सिद्धान्त

किंग का स्थलरूपों के विकास से सम्बन्धित सिद्धान्त इनके द्वारा दक्षिणी अफ्रीका की स्थलाकृतियों के अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों के ब्यौरेवार विवरण पर आधारित है। यद्यपि किंग ने डेविस के स्वाकृतिक सिद्धान्त (भौगोलिक चक्र) का जोरदार खण्डन किया है परन्तु इनके सिद्धान्त का भी मुख्य आधार चक्रीय संकल्पना की ही मान्यता है। इस प्रकार किंग का स्वाकृतिक सिस्टम भी मूलरूप में विकासीय एवं चक्रीय है जैसा कि इनके 'स्थलाकृति चक्र' 'अपरदन का भूतलज चक्र', 'पेडीप्लनेशन चक्र' एवं 'पहाड़ी ढाल चक्र' से प्रकट होता है। यद्यपि किंग ने डेविस से अलग तथा पेंक की कुछ मान्यताओं पर अपने स्वाकृतिक सिस्टम को विकसित करने का प्रयास किया है परन्तु इनका मॉडल पेंक की तुलना में डेविस के अधिककरीब है।

किंग के सिद्धान्त की प्रमुख मान्यता है कि 'स्थलरूपों का विकास विभिन्न पर्यावरण दशाओं में समान होता है जब अपरदित स्थलरूपों के विकास में जलवायु परिवर्तनों का महत्व नगण्य होता है।' सभी महाद्वीपों में प्रमुख स्थलाकृतियों का विकास त्रयात्मक भूमण्डलीय विवर्तनिक घटनाओं से नियंत्रित हुआ है। ढालों में सतत खिसकाव होता है तथा इस तरह का निवर्तन समानान्तर होता है। यह निवर्तन ढाल पर क्रियाशील प्रक्रमों द्वारा नियंत्रित होता है तथा उसी के अनुरूप ढालों का रूप बनता है।

किंग की मान्यता है कि पहाड़ी ढाल में चार तत्व होते हैं - शिखर, कगार, मलवा ढाल तथा पेडीमेण्ट। किंग ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन दक्षिणी अफ्रीका के अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में स्थलाकृतिक विशेषताओं के आधार पर किया है तथा बाद में अपने सिद्धान्त को अन्य प्रदेशों में भी प्रयोज्य बताया है। इनकी मान्यता है कि चार तत्वों (उपर्युक्त) से युक्त पहाड़ी ढाल आधारभूत स्थलरूप होता है जो सभी प्रदेशों में तथा सभी प्रकार के जलवायु में विकसित होता है जहाँ पर पर्याप्त ऊँचावच्च होते हैं तथा जलप्रवाह अनाच्छादन का प्रमुख प्रक्रम होता है।

किंग के अनुसार प्रत्येक चक्र त्वरित उत्थान के साथ प्रारम्भ होता है तथा उत्थान के बाद दीर्घकाल तक विवर्तनिक स्थिरता होती है (स्थलखण्ड स्थिर रहते हैं)। किंग की यह मान्यता डेविस की मान्यता के अनुसार अनुरूप है। इस त्वरित उत्थान के कारण नदियों द्वारा निम्नवर्ती अपरदन तेज हो जाता है तथा नदी के मार्ग में निकवाइण्ट बन जाते हैं जो नदी के ऊपरी मार्ग की ओर खिसकते जाते हैं।

किंग की मान्यता है कि निर्वतमान ढाल का रूप उस पर क्रियाशील प्रक्रमों द्वारा निर्धारित होता है। पहाड़ी ढाल का शीर्ष उत्तल होता है जो मृदा सर्पण द्वारा निर्मित होता है। कगार शैल दृश्यांश का बना होता है तथा इसमें निवर्तन होता है। यह निवर्तन शैल के दूर कर अधः पतन (नीचे की ओर गिरना) भूस्खलन तथा अवनलिका अपरदन द्वारा होता है। समस्त पहाड़ी

ढाल का सबसे सक्रिय तत्व कगार ही होता है। मलवा ढाल का निर्माण ऊपर से आने वाले मलवा के द्वारा होता है तथा इसकी प्रवणता मलवा पदार्थ के ठहराव के कोण द्वारा नियंत्रित होती है। पेडीमेण्ट पहाड़ी ढाल की परिच्छेदिका की सबसे निचली इकाई होता है तथा इसका निर्माण हारस शैल के तीव्र चादरी बाढ़ द्वारा अपरदन के कारण होता है।

यदि डेविस एवं किंग के प्रतिरूपों की तुलनात्मक व्याख्या की जाय तो स्पष्ट होता है कि दोनों प्रतिरूपों में कुछ हद तक अनुरूपता अवश्य है। दोनों स्थलाकृति के चक्रीय विकास में विश्वास करते हैं जिसके अन्तर्गत अपरदन चक्र स्थलखण्ड में तीव्र उत्थान के साथ प्रारम्भ होता है तथा उत्थान के बाद दीर्घकालिक विवर्तनिक निष्क्रियता होती है। इस अवधि के दौरान पेनीप्लेन या पेडीप्लेन का निर्माण होता है। दोनों स्थलरूपों में सामान्य अनुरूपता होती है।

किंग के स्वाकृतिक मॉडल की कुछ मान्यतायें विवादास्पद हैं। यथा - (i) किंग के स्वाकृतिक मॉडल की रचना दक्षिणी अफ्रीका के अर्द्ध शुष्क प्रदेशों की स्थलाकृतिक विशेषताओं के आधार पर की गई है परन्तु किंग ने अपने विचारों को अन्य क्षेत्रों के स्थलरूपों की व्याख्या के लिये भी प्रयुक्त किया है। यह मान्यता सन्तोषजनक नहीं है। (ii) किंग की मान्यता है कि स्थलरूपों का विकास विभिन्न पर्यावरण दशाओं में समान रूप से होता है, सन्देहास्पद है। ज्ञातव्य है कि किंग के स्वाकृतिक सिस्टम को अभी मान्यता एवं समर्थन नहीं मिला

जितना मिलना चाहिये था । इसका प्रमुख
कारण यह है कि किंग का सिद्धांत उस
समय (1953) आया जबकि लोगों की दिलचस्पी
स्वाकृतिक सिद्धान्तों की आवश्यकता, वांछनीयता एवं
उपादेयता से उठ चुकी थी । किंग के 'पहाड़ी
[illegible]